

पाठ-5



विकलांगता- कारण एवं बचाव

आपने अपने घर, गाँव तथा समाज में ऐसे लोगों को देखा होगा जो लाठी का सहारा लेकर या दूसरों का हाथ पकड़कर चलते हैं, कम या बिल्कुल नहीं सुनते तथा मुँह से बोल नहीं पाते, पैरों से चल नहीं पाते हैं तथा हाथों से काम नहीं कर पाते हैं। ऐसे लोग जिन्हें सुनने, बोलने, देखने तथा चलने में कठिनाई महसूस होती है उन्हें विकलांग कहा जाता है। विकलांगता या अक्षमता की सामान्यतः चार श्रेणियाँ होती हैं-

1. श्रवण सम्बन्धी अक्षमता, 2. दृष्टि सम्बन्धी अक्षमता 3. अस्थि सम्बन्धी अक्षमता 4. मानसिक अक्षमता

लेकिन क्या आप बता सकते हैं कि ये शारीरिक अक्षमताएँ लोगों में कैसे आ जाती है ? वास्तव में ये शारीरिक अक्षमताएँ चाहे दृष्टि सम्बन्धी हो या मानसिक या अस्थि सम्बन्धी (लकवा आदि) हों हमें मुख्यतः दो चरणों में प्राप्त होती हैं- 1. जन्मजात 2. जन्म के उपरान्त।

जन्मजात विकलांगता

जिन बच्चों को हम पहले विकलांग कहते थे उन्हें अब "विशेष आवश्यकता वाले बच्चे" कहते हैं। ये बच्चे अपनी उम्र के अन्य बच्चों के समान ही हैं केवल इनकी आवश्यकताएं ही दूसरे बच्चों से अलग हैं।

इन बच्चों को हमारी सहानुभूति या दया की कोई आवश्यकता नहीं। इन बच्चों को केवल हमारे सहयोग और प्रेम की आवश्यकता है।

आपके साथ भी कुछ "विशेष आवश्यकता वाले बच्चे" पढ़ते होंगे। सभी बच्चों को एक समान शिक्षा का बुनियादी अधिकार है। आपको क्या लगता है, इन बच्चों को आपके साथ ही पढ़ना चाहिए या उनके लिए कोई अलग विद्यालय होना चाहिए ? चर्चा कीजिए।

जन्मजात विकलांगता का आशय गर्भस्थ शिशु में शारीरिक दोष आ जाना है। आपने सुना या देखा होगा कि कुछ बच्चे जन्मान्ध, लकवाग्रस्त, मन्द बुद्धि या अन्य शारीरिक दोष के साथ जन्म लेते हैं, ऐसे बच्चे ही जन्मजात विकलांग की श्रेणी में आते हैं।

कारण एवं बचाव

जन्मजात विकलांगता के मुख्यतः कई कारण हैं-

कभी-कभी विकलांगता आनुवंशिक कारणों से होती है; परन्तु ऐसा कम ही होता है।

गर्भवती माता को उचित मात्रा में विटामिनयुक्त भोजन न मिलना तथा कुपोषण भी इसके कारण हैं। ऐसी स्थिति में संतुलित आहार तथा जरूरी विटामिन युक्त भोजन तथा उचित खाद्य पदार्थों द्वारा कम वजन, कमजोर दृष्टि तथा लकवा युक्त शिशु के जन्म की सम्भावना को कम किया जा सकता है।

गर्भवती माता को अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए तथा जरूरी सावधानी रखनी चाहिए।

जन्म के बाद विकलांगता

हमारे बीच कुछ ऐसे बच्चे भी होते हैं जिनका मानसिक विकास उनकी उम्र के हिसाब से कम होता है। ऐसे बच्चों में भी सीखने, समझने और करने की लगन होती है। हमें इन बच्चों के प्रति कोई पूर्वाग्रह नहीं रखना चाहिए। हमें इनसे स्नेह और सहयोग करना चाहिए।

जन्म के बाद विकलांगता की चार श्रेणियाँ हैं-

1. दृष्टि दोष (आँखों से कम या बिल्कुल न दिखाई देना)
2. श्रवण दोष (कानों से सुनाई न पड़ना)
3. मूक-बधिर (ऐसे लोग जो बोल नहीं पाते वे प्रायः सुन भी नहीं पाते)

4. शारीरिक रूप से अक्षम (ऐसे लोग जो पाँव से चलने तथा हाथ से कार्य करने में असमर्थ हैं या कठिनाई महसूस करते हैं)

कारण एवं बचाव

देश में इस समय विकलांग लोगों की संख्या दो प्रतिशत है। विज्ञान की प्रगति, मानव के स्थान पर मशीनों, यंत्रों, औजारों के अधिक प्रयोग तथा उससे हुई दुर्घटनाओं ने जन्म के बाद की विकलांगता को अधिक बढ़ा दिया है। इनमें सबसे अधिक संख्या शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों की तथा सबसे कम संख्या दृष्टिहीन व्यक्तियों की है। इस विकलांगता के मुख्य कारण हैं-

प्राकृतिक आपदाएँ- चक्रवात, भूस्खलन, भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट आदि के द्वारा बहुत से लोग शारीरिक रूप से अक्षम हो जाते हैं।

साम्प्रदायिक एवं आपसी झगड़ों के द्वारा भी समय-समय पर विकलांगों की संख्या में वृद्धि होती है। इन झगड़ों से किसी को हाथों, किसी को पैरों तथा किसी को दृष्टि में विकार पैदा हो जाता है। सौहार्दपूर्ण वातावरण एवं भाई-चारे द्वारा इसमें कमी की जा सकती है।

यातायात के तेज साधनों के विकास से भी विकलांगता बढ़ी है। आए दिन सड़क एवं रेल दुर्घटनाएँ होती रहती हैं। इन दुर्घटनाओं में तमाम लोग शारीरिक रूप से अपंग हो जाते हैं।

दो बूँद जिन्दगी की

सरकार द्वारा पोलियो को जड़ से मिटाने के लिए पल्स पोलियो अभियान सन् 1995 से चलाया जा रहा है। इसमें पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों को पोलियो रोकने की वैक्सीन की दो बूँदें पिलाई जाती हैं।

आप अपने घर के आस-पास के दस घरों में जाकर पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की सूची बनाएं। यह भी लिखें कि उन्हें पोलियो की दवा पिलाई गई है या नहीं। उन घरों में लोगों को दवा पिलाने के लिए प्रेरित करें।



देश में स्वास्थ्य सेवाओं के समुचित विस्तार न होने से समय पर स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध नहीं हो पातीं। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को जिंदा रखने के लिए किसी का पैर तथा किसी का हाथ भी काटना पड़ता है। अतः स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार तथा त्वरित सेवा उपलब्ध कराकर उपचार के द्वारा इसका निदान किया जा सकता है।

अब स्वास्थ्य सम्बन्धी अनुसंधानों से ऐसे अनेक टीकों को खोज लिया गया है जिनको समय-समय पर बच्चों को लगवा कर पोलियो जैसी घातक बीमारी एवं अपंगता को रोका जा सकता है। इन स्वास्थ्य सम्बन्धी टीकों की जानकारी लोगों को देना अपंगता निवारण में महत्वपूर्ण सहयोग होगा।

युद्ध जनित विकलांगता- कभी-कभी युद्धों तथा आतंकवादी घटनाओं में भी लोगों को अपने हाथ-पाँव गँवाने पड़ते हैं।

यह यंत्रों तथा मशीनों का युग है। प्रत्येक कार्य में मशीनों तथा औजारों का प्रयोग बढ़ गया है। चाहे वे कल-कारखाने की मशीने हों या खेती आदि में प्रयोग आने वाली मशीनें हों। इनके सफल संचालन और प्रयोग न कर पाने से भी अपंगता में वृद्धि हो रही है। अतः जरूरत इस बात की है कि हम देश के नागरिकों में ऐसी दक्षता तथा कुशलता पैदा करें जिससे वे सावधानी पूर्वक मशीनों का संचालन कर सकें और अपने को अपंग होने से बचा सकें।

यातायात सम्बन्धी असावधानी तथा सड़क पर चलने के नियमों की जानकारी न होना भी दुर्घटनाओं का सब से बड़ा कारण है। प्रतिदिन वाहन एक दूसरे से टकरा रहे हैं जिससे बहुत से लोग घायल और अपंग होते हैं। अतः इससे बचने के लिए सड़क पर चलने के नियमों की जानकारी आवश्यक है। वाहन चलाने में नियमों का पालन तथा सावधानी ही दुर्घटनाओं से बचाव का प्रमुख उपाय है।

विकलांगता से बचाव हेतु हमें कौन-कौन सी सावधानियाँ रखनी चाहिए ?

हमारा दायित्व

अक्षम लोगों के प्रति समाज का दृष्टिकोण अब बदला है। उन्हें पहले एक अभिशाप के रूप में देखा जाता था किन्तु अब ऐसा नहीं है। आज विकलांग लोगों ने अधिकांश क्षेत्रों में सफलता पाई है और उन्होंने दूसरों को भी सहारा देना शुरू कर दिया है। इनमें यदि एक अक्षमता है तो अनेक क्षमताएँ भी हैं। ऐसा देखा गया है कि शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्ति मानसिक रूप से अधिक सक्रिय एवं क्रियाशील होते हैं। अतः हमारा यह दायित्व बनता है कि उनमें निहित क्षमताओं को पहचानकर उन्हें विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करें।



जहाँ अक्षम व्यक्तियों के प्रति समाज की सोच में बदलाव आया है वहीं इन व्यक्तियों में चेतना का संचार हुआ है। इनमें आत्मबल तथा उत्साह जगा है कि हम भी समाज के महत्वपूर्ण अंग हैं और हमारा भी समाज और राष्ट्र के विकास

में महत्वपूर्ण योगदान है। सब के साथ सहभागिता ने उनमें उत्साह का संचार किया है। इसका कारण सरकारी सुविधाएँ, समान अवसर और सम्मान का मिलना तथा समाज के दृष्टिकोण में बदलाव आना है।

समाज का दायित्व है कि अक्षम व्यक्तियों को सभी स्तरों पर स्वस्थ सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करने का अवसर दिया जाए-

सामाजिक, सांस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियों में समान रूप से भाग लेने पर परस्पर अलगाव तथा दूरी कम होगी तथा एक दूसरे के पास आने की सम्भावना बढ़ेगी।

समान शैक्षिक अवसर प्राप्त कराने तथा उनके योग्य रोजगार उपलब्ध कराने से समाज के अन्य सदस्यों की भाँति ये भी जीवन के विविध क्षेत्रों में प्रगति कर सकेंगे।

इन्हें सम्मान देकर तथा इनके साथ अपनापन का व्यवहार करके हम उन्हें महसूस करा सकेंगे कि जिससे वे सामाजिक रूप से एक दूसरे के साथ मिलकर कार्य कर सकें। वे भी समाज के एक अंग हैं।

इनके प्रति भेद-भाव के विचार को निकालकर अनुकूल तथा सकारात्मक सोच उत्पन्न करने से वे समाज की मुख्य धारा से जुड़ सकेंगे और विकास पथ पर अग्रसर हो सकें।

घर, परिवार तथा समाज का दायित्व है कि प्रत्येक स्तर पर उन्हें प्यार, लगाव, समानता तथा सम्मान दें। उनके साथ बातचीत करें, स्नेहपूर्ण व्यवहार करें तथा उनके साथ भी हम वही व्यवहार करें जो हम दूसरों से चाहते हैं। जब भी हमें महसूस हो कि ऐसे व्यक्ति को हम इस स्तर पर या स्थान पर सहयोग एवं सहायता कर सकते हैं हमें आगे आना चाहिए।

इस संसार में कुछ ऐसे लोग भी हुए हैं जो शारीरिक रूप से अक्षम थे किन्तु उन्होंने अपनी अक्षमता को कभी अपने मार्ग में बाधा नहीं बनने दिया। स्टीफेन हाकिंग विश्व के सबसे प्रसिद्ध भौतिकविद् हैं। इन्होंने ब्रह्माण्ड के गूढ़ रहस्यों जैसे- ब्लैक होल आदि पर महत्वपूर्ण सिद्धान्त दिए हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि वे न तो बोल सकते हैं और न ही अपने किसी अंग को हिला-डुला सकते हैं।

सुधा चन्द्रन भारत की एक प्रसिद्ध नृत्यांगना एवं अभिनेत्री हैं। इनके जीवन पर 'नाचे मयूरी' नामक एक फिल्म भी बनाई गई थी। दुर्घटना में अपना एक पैर गवाँ देने के बाद भी सुधा चन्द्रन ने हिम्मत नहीं हारी और नृत्य के क्षेत्र में लगातार आगे बढ़ती रहीं।



दूसरों की सहायता करें-

यात्रा करते समय बड़े-बूढ़ों, महिलाओं, विकलांगों तथा बच्चों की मदद करें। उन्हें सुरक्षित रूप से खड़े होने के लिए स्थान दें तथा उनके लिए सीट भी खाली कर दें। इन्हें आप की दया नहीं सहयोग चाहिए।

इन्हें भी जानें

दीपावली में पटाखे छुड़ाते समय होने वाली दुर्घटनाओं में बहुत से बच्चे अपनी आँखों की रोशनी खो देते हैं। साथ ही तेज आवाज वाले पटाखों से सुनने की शक्ति भी कम हो जाती है इसलिए आप हमेशा अपने बड़ों की देखरेख में पटाखे छुड़ाएँ और तेज आवाज वाले पटाखे कभी न छुड़ाएँ।

इन पटाखों से हमारे पर्यावरण में ध्वनि एवं वायु प्रदूषण भी बढ़ता है। आप अपनी अभ्यासपुस्तिका में लिखिए कि यह पटाखे पर्यावरण को किस प्रकार क्षति पहुँचाते हैं ? आप इसे कैसे रोकेंगे ?

कल्पना

- निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए-**
 - (क) दिव्यांगों के प्रति हमारा क्या दायित्व है ?
 - (ख) दिव्यांगता के कारणों पर प्रकाश डालिए।
 - (ग) दिव्यांगजनों को सरकार द्वारा मिलाने वाली प्रमुख सुविधाओं के बारे में लिखिए।
- निम्नलिखित में सही (✓) तथा गलत (X) का निशान लगाइए-**
 - (क) स्टीफन हॉकिंग एक प्रसिद्ध कितारवादनक हैं।
 - (ख) दिव्यांगजनों के साथ समानता तथा सम्मान का व्यवहार करना चाहिए।
 - (ग) सुगन्ध भस्त्र अभियान दिव्यांगों के लिए शहार्ड गार्ड योजना है।

प्रोजेक्ट वर्क

- आप अपने घर के आस-पास के दस घरों में जाकर पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की सूची बनाएँ। यह लिखें कि उन्हें खिलौने की क्या विलार्ड गार्ड है या नहीं। उन घरों में खिलौने व गड बिलाने के लिए प्रेरित व दिव्यांगजनों के प्रति सत्कृत्यर्ण आचरण पर अवार्डित एक लघु कथनी लिखिए।